अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

किल्पाॅक को पावन बनाने पहुंचे अखंड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण

-जे.जी. परमार निवास श्रीचरणों से हुआ पावन

-आचार्यश्री ने पापों से बचने और अपने कर्मों को शुभ बनाने की दी पावन प्रेरणा

-हर्षित परिजनों ने दी भावाभिव्यक्ति

10.07.2018 किल्पाॅक, चेन्नई (तमिलनाडु): भक्त अपने भगवान के दर्शन करने को उनके दर पर पहुंचता है, यह तो सामान्य बात है, किन्तु जब भक्त की श्रद्धा अपार हो, अपने आराध्य के दर्शन की ललक हो और उस श्रद्धा को विश्वास में बदलने के लिए स्वयं उनके आराध्य उनके दरवाजे आ जाएं तो शायद उस भक्त के आह्लाद, उल्लास और उत्साह का पारावार नहीं मिलता। ऐसा ही नजारा देखने को मिल रहा है जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा की जा रही चेन्नई महानगर की उपनगरीय यात्रा के दौरान।

प्रातः की मंगल बेला में आचार्यश्री विहार करते हैं तो सैंकड़ों-सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु उनके साथ निकल पड़ते हैं। जिन क्षेत्रों से भी आचार्यप्रवर गुजरते हैं, श्रद्धालुओं का जनसमूह उमड़ा हुआ नजर आता है। अन्य लोगों के लिए यह कौतूहल का विषय बन जाता है कि आखिर ऐसा कौन है, जिसके लिए इतने लोग इस कदर प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऐसा सोचने वाला व्यक्ति भी जब राष्ट्रसंत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की मोहक मुस्कान के साथ दोनों कर कमलों से बरसने वाले आशीर्वाद में अभिस्नात होता है, तो उसकी अवधारणा बदल चुकी होती है, जिसके कारण उसका भी सर श्रीचरणों की वंदना कर रहा होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने की सीधी दूरी भले ही एक, दो या तीन किलामीटर होती है, किन्तु उन तक पहुंचते-पहुंचते आचार्यश्री लगभग निर्धारित दूरी से तीन से चार गुना अधिक किलोमीटर की दूरी तय कर लेते हैं। कितने-कितने अश्रम श्रद्धालुओं को अपने दर्शन से पावन बनाते, लोगों को मानवता का संदेश देते निरंतर गतिमान हैं।

मंगलवार को भी आचार्यश्री दर्जनों घरों में निवासित अक्षम श्रद्धालुओं सहित कई मार्ग, गली और उपनगर को पावन बनाते हुए जे.जी. परमार निवास स्थान में पधारे। अपने आराध्य की इस कृपा में अभिस्नात परमार परिवार का उत्साह अपने चरम पर था। अपने आराध्य का भावभीना स्वागत किया।

आचार्यश्री के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी व मुख्यनियोजिकाजी का उद्बोधन हुआ। उसके उपरान्त आचार्यश्री ने लोगों को श्रीमुख से पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि शुभ-अशुभ कर्मों के कारण आत्मा संसार में परिभ्रमण करती रहती है। आत्मा कभी नरक में तो कभी तिर्यंच, कभी मनुष्य तो कभी देव योनियों में कर्म के आधार पर भ्रमण करती है। इसलिए आदमी को अपने कर्मों पर विशेष ध्यान देते हुए आदमी को अशुभ कर्मों से बचने का प्रयास करना चाहिए तथा अपने जीवन के समय को शुभ कार्यों अथवा धार्मिक कार्यों में नियोजित करने का प्रयास करना चाहिए ताकि उसकी आत्मा और जीवन दोनों का कल्याण हो सके।

अपने आराध्य के अपने आंगन में पाकर हर्षित परमार परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री पुखराज परमार व सुश्री शीतल ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। परिवार के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी तो वहीं अनुश्री जैन ने गीत का संगान किया।